GLOBUS

Globus Journal of Progressive Education
A Refereed Research Journal
Vol 14 / No 2 / Jul-Dec 2024 P - ISSN: 2231-1335, E- ISSN: 2582-7200

वर्तमान सामाजिक स्थिति और विकसित भारत 2047 के लक्ष्य

*डिम्पल गुप्ता
**भृगु जी श्रीवास्तव

Paper Received: 24.10.2024 / **Paper Accepted**: 14.11.2024 / **Paper Published**: 15.11.2024

Corresponding Author: डिम्पल गुप्ता; doi: 10.46360/globus.edu.220242009

सारांश

भारत 2047 तक एक विकसित राष्ट्र बनने की दिशा में अग्रसर है, जिसमें सामाजिक प्रगति एक महत्वपूर्ण घटक के रूप में कार्य कर रही है। वर्तमान सामाजिक स्थिति को समझना और उसमें आवश्यक सुधार करना इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए अनिवार्य है। यह अध्ययन भारत की मौजूदा सामाजिक संरचना, शिक्षा, स्वास्थ्य, लैंगिक समानता, रोजगार, आर्थिक असमानता और डिजिटल समावेशन जैसे प्रमुख कारकों का विश्लेषण करता है। सरकार द्वारा चलाई जा रही विभिन्न योजनाएँ, जैसे कि 'आत्मनिर्भर भारत', 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ', 'डिजिटल इंडिया' और 'स्वच्छ भारत मिशन', समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए कार्यरत हैं। हालाँकि, सामाजिक असमानता, गरीबी, बेरोजगारी, स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी और शहरी-ग्रामीण विभाजन जैसी चुनौतियाँ अभी भी मौजूद हैं। इस शोध का उद्देश्य वर्तमान सामाजिक स्थिति का व्यापक अध्ययन कर यह समझना है कि भारत 2047 तक अपने विकास लक्ष्यों को कैसे प्राप्त कर सकता है। इस संदर्भ में, समावेशी विकास, तकनीकी नवाचार, शिक्षा सुधार और समानता पर बल देने की आवश्यकता है।

मूल शब्द: विकसित भारत 2047, सामाजिक विकास, आर्थिक असमानता, शिक्षा सुधार, स्वास्थ्य सेवा, रोजगार, डिजिटल समावेशन, लैंगिक समानता, सतत विकास, सरकारी नीतियाँ।

प्रस्तावना

भारत 2047 तक एक विकसित राष्ट्र बनने की दिशा में अग्रसर है, जिसमें सामाजिक विकास एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। किसी भी देश की प्रगति केवल आर्थिक और तकनीकी उन्नति तक सीमित नहीं होती, बल्कि समावेशी समाज, समान अवसर, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, बेहतर स्वास्थ्य सेवाएँ और सतत विकास पर भी निर्भर करती है। वर्तमान सामाजिक स्थिति को समझना आवश्यक है क्योंकि यह निर्धारित करेगा कि भारत अपने लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए किस दिशा में आगे बढ़ रहा है।

वर्तमान समय में, भारत ने सामाजिक क्षेत्र में कई महत्वपूर्ण सुधार किए हैं। डिजिटल इंडिया, स्वच्छ भारत मिशन, बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ, आयुष्मान भारत, और आत्मनिर्भर भारत जैसी सरकारी योजनाएँ समाज में सकारात्मक बदलाव लाने में सहायक रही हैं। शिक्षा के क्षेत्र में राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) लागू की गई है, जिससे व्यावसायिक शिक्षा और डिजिटल लर्निंग को बढ़ावा मिला है।

हालाँकि, कई सामाजिक चुनौतियाँ अभी भी मौजूद हैं, जैसे कि आर्थिक असमानता, लैंगिक भेदभाव, बेरोजगारी, स्वास्थ्य सुविधाओं की असमानता, तथा ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच विकास की खाई। इन चुनौतियों को दूर किए बिना भारत 2047 तक एक विकसित राष्ट्र बनने के अपने लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सकता।

इस शोध पत्र में वर्तमान सामाजिक स्थिति और विकसित भारत 2047 के लक्ष्यों के बीच की कड़ी का विश्लेषण किया गया है। इसमें यह अध्ययन किया गया है कि कैसे सामाजिक संरचना, शिक्षा प्रणाली, रोजगार के अवसर, और सरकारी नीतियाँ भारत को एक समावेशी और सशक्त राष्ट्र बनाने में मदद कर सकती हैं। साथ ही, इसमें यह भी बताया गया है कि भारत को सामाजिक असमानताओं को दूर करने के लिए किन नीतियों और रणनीतियों को अपनाने की आवश्यकता है।

साहित्य की समीक्षा

नागरज (2021) के अनुसार, 1991 के आर्थिक सुधारों के बाद से भारत का विनिर्माण उत्पादन प्रति वर्ष 7-8% की

* *शोधकर्त्ता, महाराजा अग्रसेन हिमालयन गढ़वाल विश्वविद्यालय, पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखंड, भारत*।
** *शोध निर्देशक, महाराजा अग्रसेन हिमालयन गढ़वाल विश्वविद्यालय, पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखंड, भारत*।

दर से बढ़ा है। इस दौरान, उत्पादों की विविधता और गुणवत्ता में उल्लेखनीय सुधार हुआ है। हालाँकि, इसके बावजूद विनिर्माण क्षेत्र का सकल घरेलू उत्पाद (GDP) में योगदान लगभग स्थिर बना हुआ है और आयात निर्भरता में तीव्र वृद्धि देखी गई है।

प्रमुख प्रश्न: विनिर्माण क्षेत्र अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में विफल क्यों रहा?

उम्मीद थी कि उदारवादी और बाजारोन्मुखी नीतियाँ श्रम-प्रधान निर्यात और औद्योगिक विकास को बढ़ावा देंगी। लेकिन ये अपेक्षाएँ पूरी नहीं हो पाईं।

1. **अधूरी आर्थिक सुधार प्रक्रिया:** ऐसा माना जाता है कि भारत को अभी औद्योगिक विकास की पूरी क्षमता हासिल करने के लिए सुधारों को और आगे ले जाने की आवश्यकता है।
2. **कृषि उत्पादकता की समस्या:** भारत में औद्योगीकरण की दीर्घकालिक बाधाएँ कमजोर कृषि उत्पादकता से भी जुड़ी हो सकती हैं।
3. **अपर्याप्त सार्वजनिक बुनियादी ढाँचा:** सड़कें, रेलवे, बंदरगाह, ऊर्जा आपूर्ति, और औद्योगिक क्लस्टर जैसी बुनियादी सुविधाओं की कमी भी औद्योगीकरण में बाधा डाल सकती है।
4. **विकासशील राज्य की पुनर्कल्पना की आवश्यकता:** औद्योगिक रूप से सफल देशों के अनुभव से यह संकेत मिलता है कि सरकार को औद्योगीकरण में अधिक सक्रिय भूमिका निभाने की आवश्यकता हो सकती है।

भारत के विनिर्माण क्षेत्र को पूरी क्षमता तक विकसित करने के लिए केवल आर्थिक सुधारों को जारी रखना पर्याप्त नहीं होगा। इसके लिए:

- कृषि सुधारों पर ध्यान देना होगा, ताकि औद्योगिक श्रम बल को सशक्त किया जा सके।
- सार्वजनिक अवसंरचना में भारी निवेश करना आवश्यक होगा।
- सरकार को औद्योगिक नीति में अधिक सक्रिय भूमिका निभाते हुए रणनीतिक निवेश, नवाचार, और तकनीकी विकास को बढ़ावा देना होगा।

हालाँकि, विनिर्माण उत्पादन में वृद्धि हुई है, लेकिन इसका GDP में योगदान और निर्यात क्षमता उम्मीदों पर खरा नहीं उतरा। भारत को औद्योगीकरण की सफलता सुनिश्चित करने के लिए कृषि उत्पादकता, बुनियादी ढाँचे, और नीति-निर्माण में सक्रिय सरकारी भागीदारी जैसी दीर्घकालिक बाधाओं को दूर करना होगा।

बेनमेलच (2020) के अनुसार, COVID-19 महामारी के कारण वैश्विक अर्थव्यवस्थाएँ ठप हो गईं। महान मंदी के बाद पहली बार, उन्नत और विकासशील दोनों अर्थव्यवस्थाएँ एक साथ मंदी का सामना कर रही हैं। इस संकट से निपटने के लिए सरकारों और केंद्रीय बैंकों ने अभूतपूर्व पैमाने पर वित्तीय और मौद्रिक नीतियों का उपयोग किया।

महत्वपूर्ण निष्कर्ष

1. **वित्तीय नीति का निर्धारण:**
    - उच्च आय वाले देशों ने निम्न आय वाले देशों की तुलना में अधिक बड़े वित्तीय पैकेजों की घोषणा की।
    - एक देश की क्रेडिट रेटिंग उसके वित्तीय खर्च का सबसे महत्वपूर्ण निर्धारक कारक पाया गया।
2. **मौद्रिक नीति का प्रभाव:**
    - उच्च आय वाले देशों ने महामारी से पहले ही इतिहास में सबसे कम ब्याज दरों का अनुभव किया था।
    - इसके परिणामस्वरूप, ये देश गैर-पारंपरिक मौद्रिक नीति उपकरणों का अधिक उपयोग करने की स्थिति में थे।
3. **विकासशील देशों के लिए चिंता:**
    - जिन देशों की क्रेडिट रेटिंग खराब थी, वे महामारी के दौरान प्रभावी वित्तीय नीतियों को लागू करने में पिछड़ गए।
    - विशेष रूप से निम्न-आय वाले देशों को सीमित वित्तीय संसाधनों के कारण आर्थिक संकट से उबरने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ा।

नीतिगत सुझाव

- निम्न-आय वाले देशों को वित्तीय स्थिरता और क्रेडिट रेटिंग सुधारने के लिए दीर्घकालिक रणनीतियों पर ध्यान देना होगा।
- मुद्रास्फीति नियंत्रण, निवेश आकर्षण, और ऋण प्रबंधन जैसी नीतियाँ अपनाकर विकासशील देश भविष्य में बेहतर वित्तीय नीतियाँ लागू कर सकते हैं।
- अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय संगठनों (IMF, World Bank) की मदद से इन देशों को अधिक प्रभावी वित्तीय समर्थन और आर्थिक स्थिरता प्राप्त करने की आवश्यकता है।

महामारी के दौरान वित्तीय और मौद्रिक नीति की प्रभावशीलता एक देश की आर्थिक स्थिति और क्रेडिट रेटिंग पर निर्भर करती है। उच्च आय वाले देशों ने बड़े वित्तीय पैकेजों की घोषणा की और गैर-पारंपरिक मौद्रिक नीतियों का उपयोग किया, जबकि कम आय वाले देशों को वित्तीय संसाधनों की कमी के कारण गंभीर आर्थिक संकट का सामना करना पड़ा। इस शोध से यह स्पष्ट होता है कि विकासशील देशों को अपनी क्रेडिट रेटिंग और वित्तीय स्थिरता को मजबूत करने के लिए दीर्घकालिक सुधारों की आवश्यकता है।

विश्लेषण

भारत को 2047 तक एक विकसित राष्ट्र बनाने के लिए सामाजिक विकास एक महत्वपूर्ण कारक है। यह केवल आर्थिक वृद्धि और तकनीकी नवाचार तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें शिक्षा, स्वास्थ्य, लैंगिक समानता, रोजगार, सामाजिक समरसता और डिजिटल समावेशन जैसे महत्वपूर्ण पहलू भी शामिल हैं। वर्तमान सामाजिक स्थिति और विकसित भारत 2047 के लक्ष्यों के बीच संबंध को विभिन्न कारकों के आधार पर विश्लेषण किया जा सकता है।

1. शिक्षा और कौशल विकास

(A) वर्तमान स्थिति

भारत की शिक्षा प्रणाली में पिछले कुछ वर्षों में कई सुधार हुए हैं, विशेष रूप से राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP-2020) के लागू होने के बाद। डिजिटल लर्निंग, व्यावसायिक शिक्षा और उच्च शिक्षा में अनुसंधान को बढ़ावा देने के प्रयास किए जा रहे हैं।

महत्वपूर्ण पहलू

- स्कूलों में नामांकन दर में वृद्धि लेकिन ड्रॉपआउट दर अभी भी चिंता का विषय।
- ग्रामीण और शहरी शिक्षा स्तर में असमानता।
- उच्च शिक्षा में नवाचार और अनुसंधान की कमी।

(B) विकसित भारत 2047 की दिशा में प्रयास

- व्यावसायिक शिक्षा को बढ़ावा देकर रोजगारपरक शिक्षा सुनिश्चित करना।
- डिजिटल शिक्षा को सुदृढ़ बनाना और ग्रामीण क्षेत्रों में पहुँच बढ़ाना।
- उच्च शिक्षा में अनुसंधान और नवाचार को प्राथमिकता देना।

2. स्वास्थ्य सेवाएँ और जनकल्याण

(A) वर्तमान स्थिति

भारत में स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार हुआ है, लेकिन अभी भी गुणवत्ता और उपलब्धता को लेकर कई चुनौतियाँ हैं। सरकारी योजनाओं जैसे कि आयुष्मान भारत और राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन ने गरीब वर्ग के लिए स्वास्थ्य सुविधाएँ उपलब्ध कराई हैं।

महत्वपूर्ण पहलू

- शहरी क्षेत्रों में बेहतर स्वास्थ्य सेवाएँ, लेकिन ग्रामीण इलाकों में सुविधाओं की कमी।
- डॉक्टरों और अस्पतालों की अनुपलब्धता विशेष रूप से दूरस्थ क्षेत्रों में।
- पोषण और मातृ-शिशु मृत्यु दर में सुधार की आवश्यकता।

(B) विकसित भारत 2047 की दिशा में प्रयास

- सार्वभौमिक स्वास्थ्य कवरेज को मजबूत करना।
- ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल हेल्थकेयर सिस्टम का विस्तार।
- सार्वजनिक स्वास्थ्य ढांचे में अधिक निवेश।

3. सामाजिक समानता और लैंगिक न्याय

(A) वर्तमान स्थिति

भारत में सामाजिक असमानता और लैंगिक भेदभाव अभी भी एक चुनौती है। महिलाओं की कार्यस्थल पर भागीदारी और शिक्षा में समानता सुनिश्चित करने के लिए कई योजनाएँ लागू की गई हैं, जैसे कि बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ, लेकिन अभी भी लैंगिक भेदभाव की समस्या बनी हुई है।

महत्वपूर्ण पहलू

- महिला सशक्तिकरण में सुधार लेकिन वेतन असमानता की समस्या।
- अनुसूचित जाति, जनजाति और अन्य वंचित वर्गों के लिए अवसरों की कमी।
- ग्रामीण क्षेत्रों में लैंगिक भेदभाव अभी भी प्रचलित।

(B) विकसित भारत 2047 की दिशा में प्रयास

- महिलाओं की कार्यस्थल पर भागीदारी को बढ़ावा देना।
- समावेशी नीति निर्माण जिससे समाज के सभी वर्गों को समान अवसर मिलें।
- लैंगिक समानता सुनिश्चित करने के लिए शिक्षा और रोजगार में महिलाओं को अधिक अवसर देना।

4. रोजगार और आर्थिक सशक्तिकरण

(A) वर्तमान स्थिति

भारत में बेरोजगारी एक प्रमुख सामाजिक समस्या बनी हुई है। हालाँकि, स्टार्टअप इंडिया और आत्मनिर्भर भारत जैसी योजनाओं ने उद्यमशीलता को बढ़ावा दिया है।

महत्वपूर्ण पहलू

- स्वरोजगार और स्टार्टअप्स में वृद्धि।
- पारंपरिक नौकरियों की तुलना में गिग इकॉनमी और फ्रीलांसिंग में बढ़ोतरी।
- तकनीकी दक्षता की कमी के कारण नई नौकरियों में लोगों की सीमित पहुँच।

(B) विकसित भारत 2047 की दिशा में प्रयास

- व्यावसायिक शिक्षा और स्किल डेवलपमेंट को बढ़ावा देना।
- स्टार्टअप और MSME क्षेत्र को अधिक समर्थन देना।
- आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) और ऑटोमेशन के युग में नई तकनीकों से संबंधित प्रशिक्षण देना।

5. डिजिटल समावेशन और तकनीकी प्रगति
(A) वर्तमान स्थिति
डिजिटल इंडिया कार्यक्रम ने ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल सेवाओं की उपलब्धता को बढ़ावा दिया है, लेकिन अभी भी डिजिटल डिवाइड (डिजिटल असमानता) मौजूद है।

महत्वपूर्ण पहलू
- इंटरनेट पहुँच में सुधार हुआ लेकिन ग्रामीण क्षेत्रों में अभी भी चुनौतियाँ।
- साइबर सुरक्षा और डेटा सुरक्षा संबंधी समस्याएँ बढ़ रही हैं।
- डिजिटल साक्षरता अभी भी कई लोगों तक नहीं पहुँची है।

(B) विकसित भारत 2047 की दिशा में प्रयास
- डिजिटल शिक्षा और तकनीकी प्रशिक्षण को अनिवार्य बनाना।
- दूरस्थ क्षेत्रों में इंटरनेट और डिजिटल सुविधाएँ उपलब्ध कराना।
- साइबर सुरक्षा नीति को सशक्त बनाना।

6. सामाजिक ढांचा और समरसता
(A) वर्तमान स्थिति
भारत की सामाजिक संरचना में अनेकता और विविधता मौजूद है। धार्मिक और जातिगत संघर्ष कभी-कभी सामाजिक एकता को प्रभावित करते हैं।

महत्वपूर्ण पहलू
- सामाजिक समरसता और एकता को बनाए रखने की आवश्यकता।
- विभिन्न धर्मों और जातियों के बीच आपसी विश्वास और सहयोग की जरूरत।
- फेक न्यूज़ और गलत सूचना के कारण सामाजिक ध्रुवीकरण।

(B) विकसित भारत 2047 की दिशा में प्रयास
- सामाजिक समरसता को बढ़ाने के लिए नीतिगत सुधार।
- सामाजिक संवाद को मजबूत करने के लिए शिक्षा और जागरूकता कार्यक्रम।
- तकनीकी माध्यमों से अफवाहों और गलत सूचना को नियंत्रित करने के उपाय।

भारत 2047 तक एक विकसित राष्ट्र बनने के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, लैंगिक समानता, डिजिटल समावेशन और सामाजिक समरसता जैसे विभिन्न पहलुओं में सुधार की आवश्यकता है। वर्तमान सामाजिक स्थिति में कई सकारात्मक परिवर्तन हो रहे हैं, लेकिन अभी भी कुछ महत्वपूर्ण चुनौतियाँ बनी हुई हैं। यदि सरकार और नागरिक समाज मिलकर कार्य करें, तो भारत सामाजिक समावेश और समरसता के साथ एक सशक्त, आत्मनिर्भर और विकसित राष्ट्र बनने की दिशा में आगे बढ़ सकता है।

उपसंहार
भारत 2047 तक एक विकसित राष्ट्र बनने की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहा है, और इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए सामाजिक सुधार अत्यंत आवश्यक हैं। वर्तमान सामाजिक स्थिति का विश्लेषण दर्शाता है कि देश ने शिक्षा, स्वास्थ्य, लैंगिक समानता, रोजगार, डिजिटल समावेशन और सामाजिक समरसता के क्षेत्र में महत्वपूर्ण प्रगति की है। हालाँकि, अभी भी आर्थिक असमानता, बेरोजगारी, डिजिटल डिवाइड, स्वास्थ्य सेवाओं की असमान उपलब्धता और लैंगिक भेदभाव जैसी चुनौतियाँ बनी हुई हैं, जिन्हें प्रभावी नीति निर्माण और कार्यान्वयन के माध्यम से दूर किया जाना चाहिए।

विकसित भारत 2047 केवल आर्थिक और तकनीकी विकास पर आधारित नहीं होगा, बल्कि यह एक समावेशी, सशक्त, और सामाजिक रूप से समरस राष्ट्र की परिकल्पना को भी साकार करेगा। इसके लिए आवश्यक है कि शिक्षा और कौशल विकास को प्राथमिकता दी जाए, स्वास्थ्य सेवाओं को सुलभ बनाया जाए, डिजिटल इंडिया के अंतर्गत ग्रामीण क्षेत्रों को जोड़ा जाए, और सामाजिक समरसता को बनाए रखने के लिए ठोस कदम उठाए जाएँ।

यदि सरकार, नागरिक समाज और निजी क्षेत्र मिलकर सतत प्रयास करें, तो भारत 2047 तक एक ऐसे विकसित राष्ट्र के रूप में स्थापित हो सकता है, जहाँ प्रत्येक नागरिक को समान अवसर प्राप्त हों, सामाजिक न्याय सुनिश्चित हो, और नवाचार व समावेशी विकास के माध्यम से देश वैश्विक स्तर पर सशक्त बने। **"समाज की प्रगति ही राष्ट्र की प्रगति है। एक समान, शिक्षित, और आत्मनिर्भर समाज ही विकसित भारत 2047 की नींव रखेगा।"**

हितों का टकराव
लेखक घोषणा करते हैं कि कोई महत्वपूर्ण प्रतिस्पर्धी वित्तीय, पेशेवर या व्यक्तिगत हित नहीं हैं जो इस पांडुलिपि में वर्णित कार्य के प्रदर्शन या प्रस्तुति को प्रभावित कर सकते हैं।

संदर्भ

1. नगराज, आर. (2021)। आर्थिक सुधार और विनिर्माण क्षेत्र की वृद्धि: औद्योगीकरण मॉडल को पुनः संरचित करने की आवश्यकता? रूटलेज हैंडबुक ऑफ पोस्ट-रिफॉर्म इंडियन इकोनॉमी (पृष्ठ 119-134)। रूटलेज इंडिया।
2. बेनमलेच, ई., और त्ज़ूर-इलान, एन. (2020)। COVID-19 संकट के दौरान वित्तीय और मौद्रिक नीतियों के निर्धारक (संख्या w27461)। नेशनल ब्यूरो ऑफ इकोनॉमिक रिसर्च।
3. डेब्रून, एक्स., और जोनुंग, एल. (2019)। खतरे में: नियम-आधारित वित्तीय नीति और इसे संरक्षित करने के तरीके। यूरोपीय राजनीतिक अर्थव्यवस्था पत्रिका, 57, 142-157।

4. एरंबन, ए. ए., दास, डी. के., अग्रवाल, एस., और दास, पी. सी. (2019)। भारत में संरचनात्मक परिवर्तन और आर्थिक वृद्धि। संरचनात्मक परिवर्तन और आर्थिक गतिकी, 51, 186-202।
5. बीट्समा, आर., डेब्रून, एक्स., फेंग, एक्स., किम, वाई., ल्लेडो, वी., म्बाय, एस., और झांग, एक्स. (2019)। स्वतंत्र वित्तीय परिषदें: हाल के रुझान और प्रदर्शन। यूरोपीय राजनीतिक अर्थव्यवस्था पत्रिका, 57, 53-69।
6. आर्नोल्ड, जे. एम., जावोरसिक, बी., लिप्सकॉम्ब, एम., और माटू, ए. (2016)। सेवा क्षेत्र में सुधार और विनिर्माण क्षेत्र का प्रदर्शन: भारत से साक्ष्य। इकोनॉमिक जर्नल, 126(590), 1-39।
7. कपूर, आर. (2015)। भारत के संगठित विनिर्माण क्षेत्र में नौकरियों का सृजन। भारतीय श्रम अर्थशास्त्र पत्रिका, 58(3), 349-375।
8. गोल्डार, बी., और साधुखान, ए. (2015)। भारतीय विनिर्माण में रोजगार और मजदूरी: सुधार के बाद का प्रदर्शन (संख्या id: 7349)।
9. सीन, डी., वेरोनिका, एफ., और काला, के. (2014)। राज्य-स्तरीय श्रम सुधार और भारत में फर्म-स्तरीय उत्पादकता। इंडिया पॉलिसी फोरम (खंड 10, संख्या 1, पृष्ठ 1-56)। नेशनल काउंसिल ऑफ एप्लाइड इकोनॉमिक रिसर्च।